

५६८५०

संस्कृत-विद्यापीठ-मुद्रित-मुद्रण-मुद्रण-मुद्रण

महाराष्ट्र-विद्यापीठ-मुद्रित-मुद्रण-मुद्रण-मुद्रण

मुद्रण-मुद्रण

DH 235

पुस्तक संख्या १२३५
पुस्तक नाम श्री महाभारत

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ हिमवथ रुया विधिमाह ॥ ॥
कापी दुसल पुनः पंचरक्षा नवग्रह मंदल चोपः ॥ ॥ थन दुस
ल मंदल गंकल ल के ल स गीत नाग प व लिथा कल पं रि
याये ॥ गुरु मंदल पंचगव्य सोधत ॥ लिह तय ॥ मंदल थि
लि स्वा त त ते ॥ मंदल विलस ज त ॥ विलसा धी ॥ किरण भाव

ना ॥ किरण जाये ॥ कनसा धि वा स त ॥ ॥ ततो मंदल देव
तां धि वा स त ॥ ॥ थन पुलां देव पुजा याये ॥ ॥ थन दयका देव
ज न को या य स ल सो स्यं दु का य ॥ ॥ दये का देव जात क र्मा दि
विधि थ्ये या य ॥ थन गुरु मंदल पंच रक्षा दि मंदल पूजा ॥
थन पंच रक्षा पुजा ज न को या ये ल रा पुजा या त के ॥ ॥ ॐ भ ग

यतिमहाप्रतिसरा प्रंकारजाविभाव्यः ॥ भावनाः ॥ तत
स्वहृदय अकारचंद्रमंलं तस्योपरि प्रंकाररस्मिना गुरुबुद्ध
बोधिसत्त्वादि तमवाप्त्य सत्त्वार्थं कृत्वा अवतिष्ठ भूवतंगत्वा
महाप्रतिसरा प्रमुखातु सपरिवारात् पुरतो गगनदेशे दृक्का
॥ आकर्षतः ॥ उंबनुचक्रे हुं ॥ ३ ॥ उंबगुं वे स न हुं ॥ उंबगुपा स

हुं ॥ उंबगुस्फोत वं ॥ उंबगुं वे स हो ॥ ॥ धूपकपूरैरनिरांजतः स्नोहा
गिरक्ष्माः ॥ स्नानः ॥ पूजागंधः श्रीगंधः पुष्पादिस्वेतः ॥ अघहिरासि
ति ॥ पुष्पत्पासः ॥ ॥ पंलांघंस्तुतिः ॥ क्षिपं सितः ॥ तैलाभ्यः ॥ जापः ॥
उं मनिधनिवजितिमहाप्रतिसरे ऊं ३ फट् ३ स्वाहा ॥ ये धर्मा
॥ विहितयुहामोः ॥ स्वेत वस्त्रः ॥ मुक्तिदक्षिणेशः ॥ बलि दुग्ध

साध्योदनपिप्तकं॥ मोदकं फलप्रियंगु॥ दधेना सुवराघरि
टरत्नज्वाला॥ ॥ ॐ आर्यमहाप्रतिसराये अर्घ्यं प्रति ह्रस्वाहा॥
॥ स्तुति॥ प्रतिसरे नमस्तुभ्यं सर्वसन्तिदायति लंघकुंदे तुवभा
वजुसत्वात्मकापरा॥ १॥ ॐ आर्यमहासाहस्रप्रमदनी हुं
कारजां विभाव्य॥ ॥ धुपं कुंकुमं॥ स्नानं पुष्पादिनीलं अर्घ्यं नी

लं लावतं॥ पंलांघं स्तुति॥ दिपकृष्णनेलं॥ जापः॥ ॐ अमृतव
रेवरं प्रवरं विश्वं कुंदं शकं ह्रस्वाहा॥ ॥ येधमा॥ विहिं मासनी
लवस्त्रं मुक्तिदधी॥ घृतं वलितिलोदतं॥ पिष्टकंचरमं॥ फल
गुग्मसि॥ स्तुति॥ ह्रस्ववरांमहो घोरा क्रुधा भीमभिषतां॥
हुं दंतं त्राशनिदेवी क्रोधवज्रि नमाम्यहं॥ ॥ दक्षणां तुवजं

॥ यधर्माः ॥ २ ॥ ॐ आर्घ्यमाहा मायूरस्मंकारजाविभाव्य ॥ धूपकुंकुं
मः श्रीषंड ॥ ज्ञान ॥ अर्घ्य ॥ पुष्परागः ॥ ॐ आर्घ्यमाहा मायुरि
अर्घ्यप्रतिद्वयाहाः ॥ पुजाः ॥ पुष्पादिपीतः ॥ दिपगौरसर्वपत्तै
लः ॥ पुष्पप्राप्तः ॥ पंलां घंस्तुतिः ॥ पूजा ॥ ॐ अमृतवित्तोक्तिनिगर्ध
संरक्षणी आर्घ्यती ॐ ३ फ ५ २ स्याहाः ॥ ॥ दक्षता ॥ लुंथा तावतु ॥ भुक्ति

दधिः ॥ मधु ॥ बलिपितोदतः ॥ पिष्टकं खंडवतिः ॥ फलमिति ॥ विहि
ईका पितवत् ॥ स्तुतिः ॥ ॐ महाज्ञानोद्भवा देवी हेमवर्णा प्रभा
करि विद्याराज्ञिमहामायुरिप्रणामाम्यहं ॥ ३ ॥ ॐ स्तीतवति पू
जाः ॥ भावता ॥ ॐ आर्घ्यमाहा तिस्रवति त्रंकारजाविभाव्य
॥ धूपकस्तुरि ॥ रक्तचन्दन ॥ पुष्पादिरक्ता ॥ अर्घ्यमातिक ॥ प

प्ररागः॥ ॐ आय्यमहासितवस्त्रे अर्घ्यप्रतिद्वस्वाहा॥ दीपकतुलै
लं॥ पुष्पत्यासः॥ पंलांघंस्तुतिः॥ जापः॥ ॐ विमले विपुले जयवले
अमृत्ये विरजे ॐ ३ फट् ३ स्वाहा॥ ये धर्माः॥ दक्षता सुवर्गापि प्रभु
तिः संडद्विरः॥ बजिरक्तोदतः॥ पिष्टकं पापदः॥ फलवयसिः॥
विहीष्वांवा॥ रक्तवस्त्रः॥ स्तुतिः॥ ॐ चारुवक्त्रा विलाराधि विक

लांभोरुहाशतिः॥ प्ररागाहनादिप्राप्तमन्त्रं जगन्मातरः॥ ४॥
अथ मंत्रानुसारं पुजाः॥ भावना॥ ॐ आय्यमहामंत्रानुसारं ति
संकारजां विभाव्य॥ धूपसिल्लु॥ अर्घ्यकैटवमातिक॥ आय्य
मंत्रानुसारं ति अर्घ्यप्रतिद्वस्वाहा॥ ॥ पुजापुष्पादिविबलहरि
तः॥ दीपतोमलतैलं॥ पुष्पत्यासः॥ पंलांघंस्तुतिः॥ जापः॥ ॐ

महसंभर इन्दीयेवरविमोदतिहुं २ फट् २ स्वाहा ॥ ॥ दक्षना
नुयासयेवाः ॥ भुक्तिशिरोदत ॥ बलिहरित ॥ पिष्टकमथ ॥ फल
ममलि ॥ विहिकयगु ॥ हरितवस्त्र ॥ स्तुति ॥ ॐ वै दुर्ग्यभुक्तिमा
सायमदतोत्स कविप्रमोकाषोददति देवीनमादिदिमेरूपि
ति ॥ ५ ॥ इति पंचरक्षापूजाविधिः ॥ ॐ ॥ ततो गृहमात्रिका

यमतेतुं इत्यधिकोअयंविधिः ॥ पूर्वद्वारे सुवर्णाभीमगया नृलछे
नाम्बित ॥ ध्यातमुद्राधरो विबुद्धकमलेक्षरा ॥ यवंभूतं बुद्धं म
त्तारकस्विभाव्य ॥ धूपकुंकुम ॥ स्नानपूजा ॥ गंधगोलेचनः ॥
पुष्पादिपित्तः ॥ पंजांघंस्तुतिः ॥ दिपद्यत ॥ गोरसर्षपतेन ॥ जा
प ॥ ॐ नमो बुद्धाय स्वाहा ॥ भुक्तिदिर ॥ ९ ॥ दक्षिणोस्यामव

गार्ग्यामहापुरुषलक्षणा हृदिवज्रधरसम्यवामभूमिप्रसारि
तः॥ स्वंभूतं वज्रपाणिमिमाव्यः॥ धूपः कर्पूरः॥ स्नानः॥ पूजा
गंधः॥ कस्तुरिः॥ पुष्पादिहरितः॥ पंतांघ्रस्तुतिः॥ दीपः गौरतर्प
णः॥ कृत्तनैलः॥ जापः॥ उं वज्रधराये नमः स्वाहा॥ भुक्तिपाय
सं॥ २॥ पश्चिमे रक्तवर्णी भं सर्वलक्षणा मण्डितः॥ वरदाभ

यहस्ताभ्यां विभुत्सितसरोरुहः॥ स्वंभूतं लोके स्वरं विमाव्यः
॥ धूपः॥ अगुरः॥ स्नानः॥ पूजाः॥ गंधवक्तुचन्दनः॥ पुष्पादिरक्तः॥
पंतांघ्रस्तुतिः॥ दीपघृतः॥ कटुनैलः॥ जापः॥ उं पप्रधराय न
मः स्वाहा॥ भुक्तिगुडोत्तः॥ ३॥ उत्तरे लक्षणा पेटघृतध
र्मातिमुद्रिकः॥ कुंकुमारुतसंकासा विभुत्कुमारविग्रहा॥

स्वभूतं मंगुश्रीयं विभाव्य ॥ धूपश्रीषंडरक्तचंदन ॥ हस्त ॥
पूजा ॥ गंधं कुंकुम ॥ पुष्पादि कुंकुम ॥ पंतां घंस्तुतिः ॥ दीपस्ति
तैले कटुतेलं ॥ जाप ॥ उं कुमाराये नमः स्वाहा ॥ भुक्ति द
ध्येत् ॥ ४ ॥ ईसातेतु ग्रहा सर्वस्फंदादि प्रमुखागता ॥ ता
तावरा विरूपाक्षामयत्प्रातिभयंकर ॥ स्वभूतां सर्वग्रहा

विभाव्य ॥ धूपस्पर्जरस ॥ हस्त ॥ पूजा ॥ गंध ॥ पंचगंध ॥ पु
ष्पादि पंचवरा ॥ पंतां घंस्तुतिः ॥ दीपस्पर्जतेल ॥ जाप ॥ उं
सर्वग्रहा तां स्वाहा ॥ भुक्ति दत्तोदतः ॥ ५ ॥ कृतिकादि ति
नक्षत्रात्पं अंजलि हस्तकातिच ॥ स्वस्ववाह तमारुठान्य
नोचित्रमुत्पातिचै ॥ स्वभूता सर्वतक्षत्रातिविभाव्य ॥

धूपः सर्जरसः॥ स्नानः पुजाः॥ गंधः पंचगंधः॥ पुष्पादिविष्ववर्गाः
॥ पंजांघंस्तुतिः॥ दिपः सर्वतैलं॥ जापः॥ ॐ सर्वतश्चानां स्वा
हा॥ भुक्तिदध्वेन॥ ६॥ रश्म्युपद्रवा सर्ववातकर्पूरर
त्नकाः॥ विष्ववर्गानि घोरशयाविभक्त्यविक्रिताननाः॥ स
र्वभूता सर्वोपद्रवा विभाव्यः॥ धूपः सर्जरसः॥ स्नानः॥ पुजाः॥

गंधः पंचगंधः॥ पुष्पादिनातावर्गाः॥ पंजांघंस्तुतिः॥ दिपः सर्व
तैलं॥ जापः॥ ॐ सर्वोपद्रवाना स्वाहा॥ भुक्तिमाषभक्तः॥ ७॥
वायुचन्द्रासना रुद्रावजुपर्व्यं किति स्थरिः॥ त्रिमुष्पाषट्
पुजासोम्यासिततिलारुताननाः॥ मूलदोर्न्यधुताव्या
नमुद्रापप्रलोचना पञ्चरत्नधरा सव्यपाशसक्तिधरा

परैरन्तमकुटिनीदेवीसर्वलिंगकारभूषिनी॥स्वभूतोय
हमाचीवनायभगवतिविभाव्य॥गंधर्धूपज्ञान॥पुजा॥गं
ध॥श्रीषंड॥पुष्पादिपित्तवर्णा॥पंलाघंस्तुति॥दीपघृत॥जा
प॥ॐमहाविश्वे रुद्रफल्गुवाहा॥भुक्तिःछिर॥ ८ ॥नतोमंदल
वाह्येभुः॥॥पूर्वेस्तरावतारुठापीतांभोवगुभिकरः॥महाज्ञा

नसमापन्नोरन्तवयनमस्तुते॥पुजा॥गंधकुंकुम॥पुष्पादिपित्त
वर्णा॥पंलाघंस्तुति॥घृतगौरसर्षप॥दीपः॥ॐघृतराष्ट्रायस्वाहा॥
भुक्तिसिरभक्त॥ ९ ॥दक्षिणोमहीषारुठाभयस्यापिभयंकरः॥
सर्वलिंगकारभूषांगधृष्टांभोदंदसूतभृतः॥स्वभूतंविहृ
कंविभाव्य॥धूपस्तर्जरः॥स्नानपुजा॥गंधकलुरैः॥पुष्पादि

कालवराः॥ पंताघंस्तुतिः॥ दीपघृतः॥ कल्पितेत्तः॥ जापः॥ उंवि
रुढकायस्वाहाः॥ भुक्तिदधिमाधमक्तः॥ २॥ पश्चिमैककरारु
ढंफुताचित्तसर्वलंकारसंपन्ताः भुजंगपालंचसंभक्तः॥ स्वभू
तंविहृपाशंविभाव्यः॥ धूपस्तर्जः॥ स्नानः॥ पुजाः॥ श्रीखंडचंद
नः॥ पुष्पादिसितवराः॥ पंताघंस्तुतिः॥ दीपघृतः॥ जापः॥ उंवि

रुपाशायस्वाहाः॥ भुक्तिधिरांगनः॥ ३॥ उत्तरेनक्षमरुढं पितोर्ज
कुसगर्नताः॥ तानावरायसोपेताः सर्वलंकारलोभितः॥ स्व
भूताकुवेरंविभाव्यः॥ धूपस्तर्जः॥ स्नानः॥ पुजाः॥ गोतोचनः॥ पु
ष्पादिपितः॥ पंताघंस्तुतिः॥ दीपघृतः॥ गोरसर्षपः॥ जापः॥ उं
वैश्रवरायस्वाहाः॥ भुक्तिघृतोभक्तः॥ ४॥ यतपंचरश्माव

लिविये॥विधिथ्येपुजाः॥ ॥थकालिमंदलथिले॥स्वातवो
ये॥आनिर्वाह॥चेतपूर्वाह॥दशनापुजाः॥ ॥~~अनिर्वाह~~
~~लपुत्रगुले~~॥ ॥सतिपुत्ररूपांविषजर्नवलिधोये॥ ॥
थतंलिहपांथाकलपे॥जज्ञेपुणार्किलतःताहावोकलम
नागपसग्यतमनमकुटभतिईगायेश्रीलक्ष्मिपशाल

क्षिदेतवलिपंचगव्यआदिंथाकलपे॥रिचाय॥गुरुमंदलपं
चगव्येसोधन॥लिहतय॥मंदलथिले॥विममाधि॥केससपं
मनमकुटपुजा॥जज्ञेस्थापन॥अनाहुति॥पुत्रोदेवपुजाः॥दे
ताहुतिः॥ ॥थतंलिदयेकादेवविधिथ्येप्रतिस्थाकर्मयाय॥
थतननकीयायज्ञंनंईहिसचातदतसांथ॥२१॥ससतया

वगुरुमंदलदनकेः॥ नोहातिरश्माः॥ सोद्यायकेः॥ मासकेलकेः॥
॥ भद्रवातयः॥ निविचाजोनकं कृते द्योयाव कोलतनुयेकेः॥
गुलिधनकेः॥ धनत्वनिचोयाव डकुदासनसतयः॥ अवहा
मोहनतमोहनकुयकेः॥ पंचांमृतपंचोपधिः पंचवधवनह्ला
नः॥ पप्रचोयावतयः॥ धनथातपाजुपेसितकसायगातये

स्यं जवलंचोतोस्ये पिवसमुद्रयातंषतलुयः॥ गुरुतसंषलंष
नलुयः॥ सर्वकर्मिककलसोदकेनह्लातयातकेः॥ वाक्पः॥ ३
जसंगतंसचित्तस्यजितप्रभेनसत्केतुनाममहासुभाषिते
नश्रीरत्नसंभवजितस्यरितेवित्तस्यतसंगतंभवंतुपरमाभि
षेके॥ धनंतितातजोनकं वसातायाव धनह्याव धन

था स सनया वः आचार्य पंचगंधनं विला वः पंचगव्ये वियः॥
थ न वरुचः कर्ण हस्ताभरतादि स्वस्तिवाके नदिगते स्पेत्त व
दायः॥ नुवित तं निचकेः॥ स्वस्तिवाके त अधिस्था तया यः॥ ॥
थ न त वगुहदातः॥ सादा त वियेः॥ जनको याता स तं॥ ॥ स
देसा न पुं स तया तः॥ ॥ आदि सदा तः पुं स राः॥ लोमः॥ आ

चार्यः॥ मंगलः॥ विप्रः॥ वृद्धः॥ आचार्यः॥ धृहस्पतिः॥ आचार्यः॥
शुक्रः॥ आचार्यः॥ सति श्ररः॥ विप्रः॥ राहुः॥ विप्रः॥ केतुः॥ विप्रः॥
जन्मः॥ देवज्ञः॥ पंचरक्षाः॥ ५॥ आचार्यकायः॥ दातवाक्येः॥
विप्रः॥ आदिते स्वा त वाः॥ मायासाः॥ आदि त्पां यका सि प गो
त्राय आदिति गं भस्मं भूताय शुमितामः कुलदेवताय दात प

तेऽभ्युक्त्या पुरारोग्यकामतार्थं सर्वरोगप्रसांत्पेथं रजत
घटितसवत्सधेनुप्रतिष्ठां संप्रणोषयामि विहिपात्रं द
क्षतांच ॥५॥ आचार्यः ॥ सोमया ॥ भुपुहामो ॥ संघः ॥ उंसो
मायः पिरोदात्तवसंभूताय सासोतदेवताय दातपतेरारो
ग्यकामतार्थं सर्वरोगसांत्पेथं रजतघटितसंघतुभ्यः महं सं

प्रयशामि संघ ईशु दक्षता प्रतिष्ठां संप्रणोषयामि विहि
पात्रं दक्षतांच ॥२॥ विप्रः ॥ अंगारयाः ॥ पकाः ॥ पुसाः ॥ अंगा
रयः भुमिसुताय ईश्वरदेवताय दातपते आपुरारोग्यकामता
र्थं सर्वरोगप्रसांत्पेथं रजतघटितमहंतुभ्यं संप्रयद्यामि र
जतघटितभनंदातप्रतिष्ठां संप्रणोषयामि विहिपात्रं द

१५ तांचः॥ ३॥ पुद्गया॥ आचार्य्यः॥ ईका लु॥ ॐ पुद्गयाय सोम
मुताय रोहिति पुत्राय वज्रसुव्य देवताय॥ दानपति अमुकस्य
आयुरारोगिकामनाथं सर्वरोगप्रसांथं सुवरादिक्षना तु
भ्यमहं संप्रयद्यामि सुवरादिक्षना प्रतिष्ठां दक्षनां संप्र
प्रणोषयामि॥ विहि पात्र दक्षनांचः॥ ४॥ १५ हस्यति॥ आचा

र्य्यः॥ तद्योः॥ पितृवाक्यः॥ पुगं लु॥ ॐ हस्यति अंगारमुताय च
तुर्वेदांग पारगाय देवतांगरुपाध्याय अक्षोभ्यकुलदेवता
यः दानपति अमुकस्य आयुरारोग्यकामनाथं सर्वरोगप्रसां
थं पितृवाक्यः पुगंतुभ्यमहं संप्रयद्यामि॥ ईदृ दक्षनापि
तवाप्युतं प्रतिष्ठां संप्रणोषयामि॥ विहि पात्र दक्षनां च

॥५॥ आचार्यः ॥ शुक्रया ॥ विहिः ॥ कयगुः ॥ सतुः ॥ ॐ शुक्राय भूगु
ताय देत्यगु रूपाध्याय वैरोचन कुल देवताय दानपते अमू
कस्य आयुरारोग्यकामनाथं सर्वरोगसांत्यर्थं रजतघटितम
श्वदातनुभ्यः महं संप्रयच्छामि ईश्वर रजतघटिततुरंगदक्षना
प्रतिष्ठाथं संप्रयच्छामि ॥ विहिपात्रदक्षनां च ॥ ६ ॥ विष्णुः ॥

शनिचर्याः ॥ विहिमासः ॥ कयगुः दिमाः ॥ ॐ सतिश्वराय सुख्य
गुताय छायागर्भसंभूताय प्रदिडविषयसंभूताय अक्षोभे
कुल देवताय दानपते अनुकस्य आयुरारोग्यकामनाथं सर्व
रोगप्रसांत्यर्थं कृष्णधेतुसर्वाभिरासहिता रजतघटितधे
नुदातनुभ्यः महं निर्व्यंजयामि ईश्वर रजतघटितधेतुप्रति

सार्धं संप्रथोषयामि॥ विहि पात्र दक्षनांच॥ ७ ॥ विप्र॥ राहु
या॥ म्यात॥ अथवा॥ हामो॥ प्रडग॥ उं राहवेसिं ह सुताय अ
मृतप्रियाय कुलिते स्वर्देवताय दातपते अमुकस्य आ
पुरारोग्यकामनार्थं सर्वरोगसांत्पथं रजतघटितखड्गदा
नंतुभ्यमहं निर्व्यांतयामि ईषु दक्षना प्रतिष्ठाार्थं संप्रथो-

षयामि॥ विहि पात्र दक्षनांच॥ ८ ॥ विप्र॥ केतुया॥ विहि
कोत्तः॥ अथवासुंग॥ चोत्ते॥ उं केतुव्ये आकाशभुताय ख
ड्गपाशव्यगुरुताय खड्गकुलदेवताय दातपते अमुकस्य
आपुरारोग्यकामनार्थं सर्वरोगसांत्पथं रजतघटितघा
गदानंतुभ्यमहं संप्रथयामि॥ ईदं ईषु दक्षना प्रतिष्ठा

थं संप्रदोषयामि ॥ विहिपात्रदक्षनांच ॥ ५ ॥ जन्मया ॥
देवग्नः ॥ विहिआभातः ॥ सिंहासतः ॥ ३ ॥ जन्मने जन्मतश्च
त्र देवताय वैरोचतकुलदेवताय स्वप्नासनोपरिस्थि
ताय ॥ दानपते अमुकस्य आपुरारोगे कामनाथं सर्वरोग
प्रसात्पथं ॥ रजघनि स्वर्णमितदानं तुभ्यं सहं प्रयच्छामि ॥

इदं रजतघनि स्वर्णमितदानं प्रोक्तं धार्मिकं संप्रदोषयामि
विहिपात्रदक्षनांच ॥ ५० ॥ इति प्रथमतो विप्राय पश्चादाचा
र्यादिभ्यो दानं दत्त्वा ॥ ॥ धनस्वस्तिवाक्येन मंदलप्रदक्षि
नाया तावत्स्थयान् देवते स्वस्तिकसप्तस्यंभावना ॥ ॥
तीर्णो ॥ ॥ धनचतुर्मासं दत्तं सुर्वमंदलं नववषट्मजो

नका. गो. लहा सा स. मंगला लं चो या व. वत स अ धर्म
गल नै उये का व. हा सा. निरा वति लो हते. थया दे व ने
मु व र्ग र्थ स. भि गु व्ये ला स. त्या नि वा के न. र्थ स दे जा
य के. लि फु त स्व च कं नो को न तु कि त गा ल के. ॥ प्र ता
प द्या ये. ॥ म त र्क्ष द्यो ये कं त य. ॥ ॥ थ न व ह्या द्वा फु त्वा

न १०८ फो ल नै उ लि षा वि ज य धा र ति १०८ प द पं द्या फु त्वा
नै धु च के. ॥ नि फं लु यः. ॥ ॥ थ न पु त्र पो त्री दी स क ट्ये नै
पा लि स अ र्घ या यः. ॥ अ र्घ लु ल टि १२ द क्षि ता लु ति स ति
६४ पा हि ता पं द्या यः. ॥ ॥ लु ति या यः. ॥ थ न स्व नि वा
के न मं द ला नि कृ ण ड स्व चा क उ य के. ई हि स चा द त सा

सुखं वाच्यं नृणां धर्मोऽयम्

DH 235

धरणीकृत धवकस

क छे

धरणी व धवकस धरणी व धवकस

DH 235

क्रमध्वेन कृतानुष्ठितानुया. दुहुलीषधा. तथ य. ॥ ताचा
शो न कं डय के. ॥ ते रिप स. ईसा न को न ल स्य लि बो या
क. थो ति गु को न सं. निरां ज न ता ल चा. मत. फ. अ. लि. स
गो न तो य. ॥ नि फं तु य. ॥ थ न गुरु या व व स त या व आ हु
तिया य. ॥ मंत्र. ॥ इं वी ज का ति ये चा हा. ॥ छ ता हु ति. ॥ ॥

थ न प्रतिष्ठा मंदल भाव ता विधि ध्ये. ॥ देव ता हु ति. ॥ मं
दल स. ये ध म. ॥ मंदल स दु हा व ना भा ल पे. ॥ थ न ज ज
मा न री. पंच प्र ना म. ॥ ॥ थ न सु वे ला स दे व प्रति स्था
वि धि ध्ये. ॥ ॥ थि हा ले क्र म ध्ये. ॥ ॥ द य का दे वा वि धि
ध्ये पु जा. ॥ दे व ता हु ति. ॥ आ हु ति वि ये. ॥ दे श व लि वि

ये॥ ॥ सिध्याधिवातनः॥ पूरार्द्रिः॥ सगवततय॥
दक्षताः आतिवर्दिः॥ क्षमापतः॥ सेवादुतिः॥ विल
र्जनः॥ ^{देवकलिष्टेव} रजोमंदलः मंदलोपहारः॥ कलललवल्हाये॥
॥ ॥ देवजात्रावतालिः पिबालुपुलवलिः पियमोह
घमोहवर्द्धनया कवाधर्द्युय॥ दाल्याकलसजोर्

तये॥ ललोयादुकाय॥ आगमसकुमारिपुजा॥ चर्ल
जाविर्पथिके॥ कुलारियाप्रसादकाय॥ समयाचक्र॥
गतचक्र॥ लषवलिः॥ ॥ इतिमहारथक्रियावि
धिः॥ ॥ ॐ नमः॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

धननवगुह्याभुक्तिः॥ धूपकुंकुमः॥ अर्घ्यताम्रः॥ आदिते॥
पुष्पागंधः रक्तचंदनः छाडचंदनः॥ मानिस्यां विहिष्याधोः फ
लमिति कालेऽपि दक्षताः हाकुमाचासाः सधिः प्रसुसधिः
पकाचिकैः क्षीरजा॥ ५॥ चमया॥ धूपकपूरः अर्घ्यमोतिः पुष्पा
चेतगंधः श्रीषड्दिपचेतनेतः भुक्तिः दधिभक्तं विहिष्येत

निलः फलमधुफलं पिलाषफलमिति पलेष्याः पेलसधिः
दक्षताम्रः॥ २॥ अंगारया॥ धूपघुंगः अर्घ्यलुलुगः पुर
रक्तचंदनः दीपकगुनेतः भुक्तिः गुडभक्तं फलः हिसि॥
विष्टमोदकः विहिषकाः दक्षताः धुपाः असयेष्याः॥ ३॥
गुह्याः॥ धूपलितः॥ अर्घ्यलुवर्याः पुष्परागः गंधः क

गुह्यविद्याः पुष्पपित्तः दीपः इकाचिकं विहि इका पित्तवत्सु वि.
रथि रक्तः कलचाकः सिल इतथिः ५१ नातुः ॥ ४ ॥ ६ हस्यतिवा
धुपः घृतः मधुः अर्घ्यं सुवर्णः गंधशीर्षः पुष्पादिपीतः कुलेत्यां
पुष्परागः विहितः ६० ॥ ५१ नातुः पित्तवत्सु सिरथिः वलगातः फल
यसिः हलतिः सुमथिः दिपगो घृतः गौरसर्षपतैलः भुक्तिघ
नपुतिः ॥ ५ ॥ ५१ कया ॥ धुपः कुलहाः सिरुः अर्घ्यं कयेत् हृपे

गंधशीर्षः पुष्पादि सुकः चंपात्यां दिपः घृतः स्येततैर् विहि
धुपः ५१ नातुः सिरथिः इवततिः फलनांसिः भुक्तिगुड
पिष्टसद्यतः ॥ ६ ॥ मतिश्चरया ॥ धुपः गंधः रसः अर्घ्यं निलः ला
घतः पुष्पादिः ५१ नातुः पुगागंधः सर्वगंधः जिह्यां दिपः ५१ नातुः
विहितामः दानहा ककयेगताः ५१ नातुः सिरथि



ॐ नमो श्री गुरुभ्यो नमः ॥ जन्तुकोविदिमाहः ॥ ॥ ह्वा
पांथाकलपे ॥ रिचाय ॥ गुरुमंदनदत्ते ॥ पंचगव्यधा
य ॥ पंचगव्येविय ॥ सिद्धयः ॥ महतिरूपः ॥ मंदलधि
ले ॥ किं न ॥ विसर्जन ॥ निस्तमाधियाय ॥ कलसः सद्य
महः निस्तारः सिपतिर्ग्वलायवा ॥ ॥ पिदिगुत्तमयसम

मं पूजायाय ॥ दिवदकांपूजा ॥ धनमुवालयस्यं गुरुमंद
लदनकः ॥ मरुपूजा ॥ मंदलविसर्जन ॥ सिद्ध्याधियासन
निलांजनक्याय ॥ वगुतायामरुहंताय ॥ पंचगव्येनैति
के ॥ नामाकर्तः ॥ पंचगव्येविय ॥ लोलुलंदिगतास्येविय
॥ छारुपातविय ॥ स्वस्तिवाकितः ॥ सिंपहिससंघलंघनहा

स्यैस्वध तया यः॥ मं ५॥ उं आ सर्व सैस्वध निरुं॥ ॥ उंगल
सि हल स धल साधल कलि रुया वा रुयः॥ वं ५ सूर्य दि
गूद वया रुकायः॥ मवाया रुविस्पिनकः॥ उं आ धूम धू
आ स नरुं स्या हा॥ स्वपोल नकः॥ धाना सना वायकः॥ थ न
सि पति दिगमा स्य वियः॥ नेक्या आदि सि सावा सा दकां न

कः॥ उं स मरि वि रुल जित पू वृ प्रित न नरुं स्या हा॥ ना सि क
उं रं स्या हा॥ थ न रं का का वा दी गमा स्य मू वा या रु लडा लायः॥
धे स प वियः॥ रु पू ल न वियः॥ थ न हि सा रु म वा या रु दि गमा या
लगा लायः॥ मजा न का यकः॥ पोगल न वियः॥ हि सान न हिय
कः॥ दि दि व लि वियः॥ थ न रं न का रु गा रु वा रु कः॥ अ वि स्थान

नैनकः॥ ध्वस्वनीतातकः॥ नासिकः॥ वातासुधातगुरुककल
 क्कायः॥ वपुषः॥ स्वातमातातकाभायकः॥ जलाध्ययनीविषः॥ सि
 हंलूयः॥ वज्रीथियः॥ कोमानिपूजाः॥ पिथः॥ दिपूजाः॥ मंदन
 थिलः॥ किरनः॥ शासिवादिः॥ विसर्जनः॥ दकुवादीशकायः॥
 सुपः॥ महानिकायः॥ विरूपूजाः॥ छांदियायः॥ वापनस्यंदिदि

बलिष्ठा यः॥ कामा विष्ठा यः॥ मूवा गत स्या किष्ठा यः॥ दिगू स
 मयः॥ कामा विहि क्रि हि यः॥ समया वक्रः॥ विसृज नः॥
 कोला वा मयः॥ ध्वे स ध्वे ज्व स ध्वे वि यः॥ लो क न या यः॥ अ य
 र क ल ष्ठा यः॥ ॥ इति क न का विधि रु लः॥ ४५ ल ४१॥ ॥

दध

क न का अ क ल पः॥

काशयो	आयुः	हि सा क
ग्वे ला वा	कू ला नि	सि प ति
स य	क ल ल	म क

वा गू ह म य
 अ हि
 वा य
 अ हि



ॐ ह्रीं ॐ

सुप्तावकः॥ ॥ कुसुमवर्धनविधिसाह॥ कलसपूजाकार्त्त॥
गुणमंदलः॥ पंचगव्यः॥ तिरुहयः॥ मंदलधिलः॥ किरतः॥ वि
सृजतः॥ सुमाधियायः॥ कुसुमवर्धनमहः॥ अर्चिपूजाः॥ दिवपूजा
॥ अनुरागलिसयालस्यर्च्यहयः॥ गुणमंदलदतकः॥ मरुपूजाः
॥ दमासः॥ रुतुः॥ रुसावाः॥ रुसवापाः॥ पूरुकाः॥ कयेचाः॥ थकू

कृत्स्नं च कृत्स्निवाञ्छुः सखाः नमन्ताः नयः॥ इति सखाः
क्रायवर्धनयः दयासः सिद्धमूकः॥ पूजायाः नयः॥ मरुपूजाः॥
विसृजितः॥ च न सिध्यन्त्यवताः॥ निषाङ्गनः लाहागनिलका
च न कुसलं घनमालः कृत्स्नः॥ पंचगव्यवियः॥ दमासः नया
गुप्तकः नः दिगन्ताया लङ्काः क्रायः॥ क्रापाः सृष्टः कृतः॥ च कृत्स्निः

एतन्मूकनसिद्धः क्रायः॥ सः न्यायाचयः सपलप्याव
कः॥ २९ मूकः क्रायः हितः॥ ब्रूमापादयः सपलसख्यः
कः॥ क्रायः पापाः क्रायः अंगलसिद्धः सवर्धनः स्वप्यादिः॥ पूर
ननः ब्रूतिः दद्यायः॥ क्रायवर्धनः क्रायः ला क्रायवर्धनः दया
नयः॥ च न स्ययः॥ मिहायाः नयः लङ्काः क्रायः॥ सिद्धः हि

दिहिकं मूलकाय ॥ ५ न विष्णु दिहिका ॥ मंदलधिल
 ॥ दिहिके ॥ आसिवादि ॥ मंदलधय ॥ सधर्महनिछाय ॥ दि
 हिका ॥ सधर्मविय ॥ मदिनपूनुषयाहविय ॥ मोमकमि
 सायाहविय ॥ देवर्षाहकायक ॥ गुनुथकासि सकस्यार्ह
 वियक ॥ सिहिलय ॥ वज्रधिय ॥ सिहिकिक ॥ दकुता

देवर्षपकलकाय ॥ दिगूसमयकाय ॥ विसर्जन ॥ सध
 याचक ॥ कोलावाहय ॥ सधर्मविय ॥ उरुन ॥ मुषसि
 दि ॥ ॥ ॥ हि सप्पाचक विविहल ॥ ४३ ॥ ॥

धनकप्य

देव

धनक

सगुल

कोक

नये

मध्याह्न

ॐ ति
५।५

ह्रीं नमो ब्रह्म माता सिद्धम्



विदुस्तनातपायम्॥



अहं वदता तयाय ॥ इति श्रीवज्रहनुकाय हं हं ॥ अहं
 मं गुणाल तया हं स्वध तयाय ॥ इति श्रीवज्रहनुकाय हं हं
 हं स्वाहा ॥ दनया हं हं ॥ इति सर्ववृद्धतादि नियम वज्रवत
 नियम वज्रवेना वतिय हं हं ॥ अमनीहिय ॥ गृह्य २ व हं
 मानक वन र्धन वय र्दु हं हं ॥ अस्तवृय ॥ अलिचिह्न

नायाय गुरुतः ॥ अं १४ ॥



वह



मगधौवन



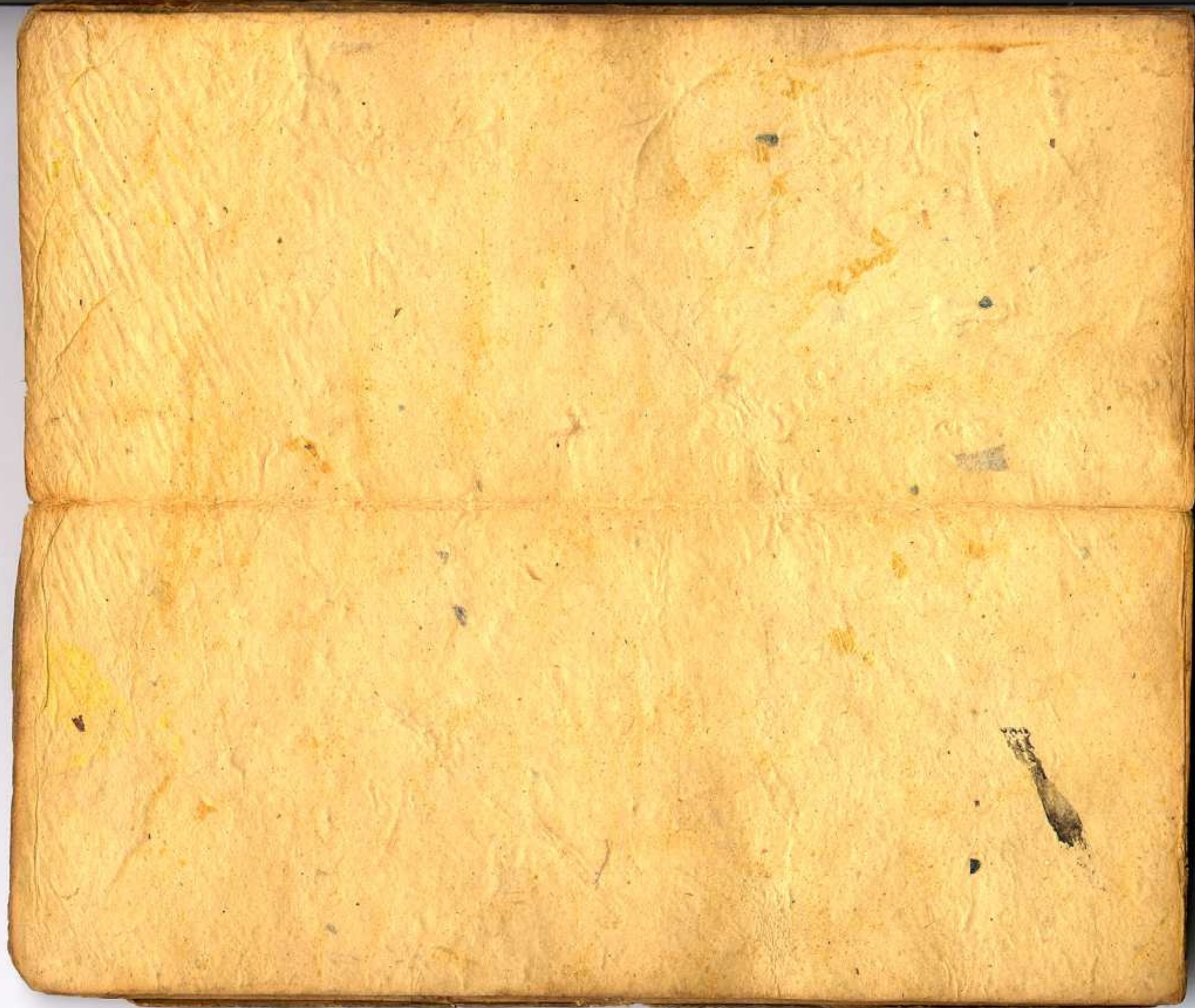
हाया पुनाभ सकल ययाय गुलमैगोऽपंचगाभिश्चयाये स्मिहृतये

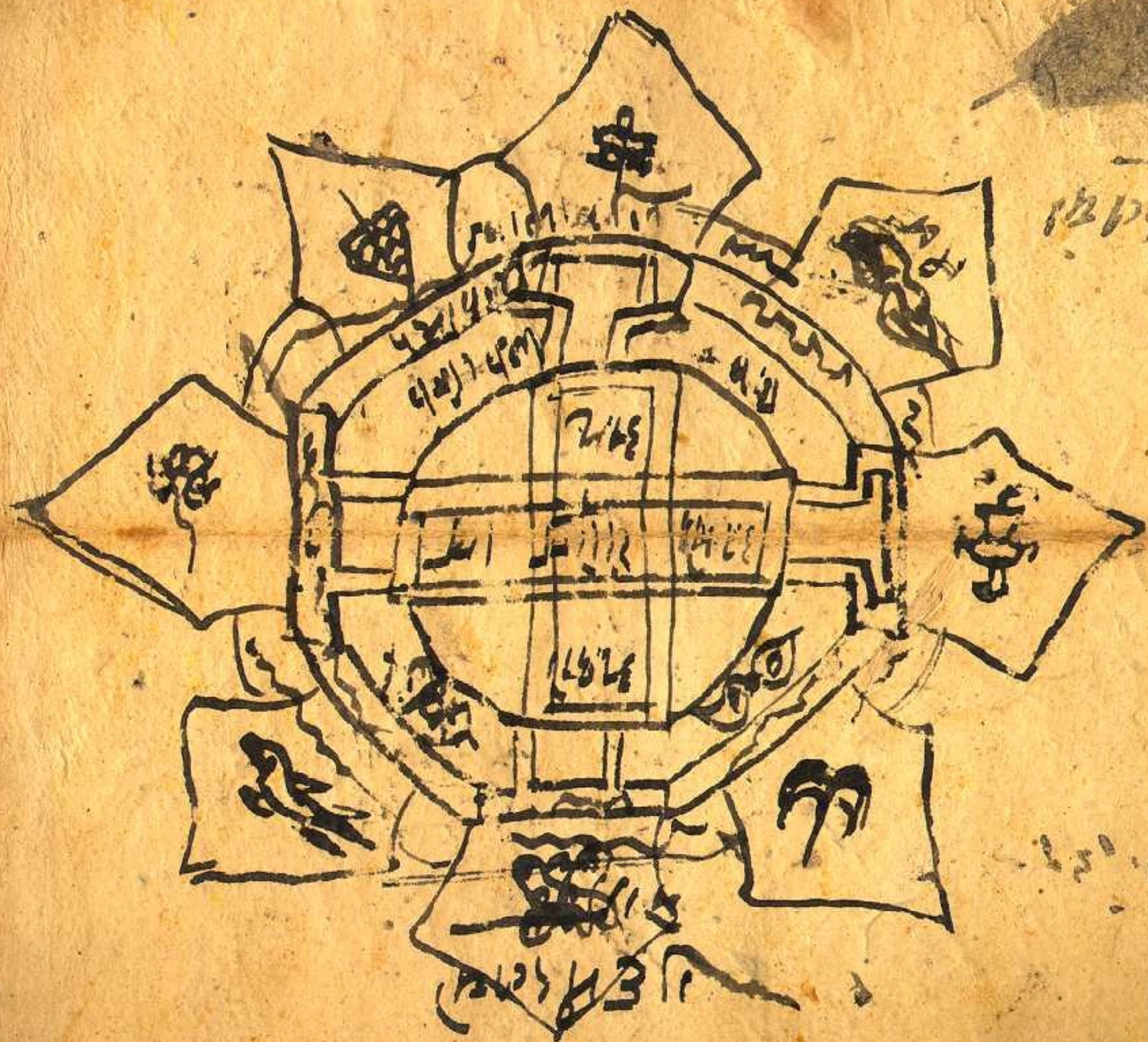
मराऽल धीधिसभादिनके कल सभन सगधोमत चापीं युजायाये विजरी

यत्वागां ५ कोवज सत्वा न आवोगो स्यास्ति लो क कुश नयेके इत्येती

स्येस्वभायमु भ्रमव चायुजायाये ३२ पंचगाभिहाहायायैक







ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

पदार्थ गुण वर्ग आचार्य म ल री

पंचाक्षर



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

(५)

ॐ नमो

ॐ नमो

महेश्वर महाभाग

ॐ नमो
 ॐ नमो
 ॐ नमो

महेश्वर